दिनांक 10 अप्रैल, 2018 को The Homoeopathic Medical Association of India, Ranchi Unit द्वारा आयोजित कार्यक्रम में माननीया राज्यपाल जी का अभिभाषण

सर्वप्रथम, World Homoeopathy Day के अवसर पर आप सभी Homeopath Doctors को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें।

World Homoeopathy Day Homoeopathy के जनक Dr. Samuel Hahnemann की जयंती के अवसर पर मनाया जाता है, जो कि मूलतः एक Allopath Doctor थे। उन्होंने संसार को एक नई चिकित्सा प्रणाली देने का कार्य किया। मुझे The Homoeopathic Medical Association of India, Ranchi Unit एवं Maa kalawati homoeopathic medical college & Hospital द्वारा आयोजित ऐसे महान व्यक्ति की 263वीं जयंती समारोह के अवसर पर आप सभी के बीच सम्मिलित होकर अपार प्रसन्नता हो रही है।

Dr. Samuel Hahnemann ने पुराने शास्त्रों का अध्ययन करते समय Homoeopathy के विषय पाये, जिनके प्रयोग से उन्हें अच्छे परिणाम मिले और उन्होंने इस चिकित्सा प्रणाली का विकास किया। Homoeopathy एक ऐसी चिकित्सा पद्धति है जो सुरक्षित, सरल एवं प्रभावी है। यह एक सहज, सुलभ चिकित्सा प्रणाली है जिसके कारण व्यक्ति निःसंकोच Doctors के सु झाव के अनुसार दवाइयों का सेवन कर सकता है।

Homoeopathy में व्यक्ति के मानसिक एवं शारीरिक लक्षणों के साथ-साथ उसकी प्रकृति, व्यवहार, आचार-विचार आदि पर गौर करने के बाद ही दवा दी जाती है, जिससे व्यक्ति के रोग का ही नहीं, वरन् उसमें छिपी समस्त ज्ञात एवं अज्ञात बीमारियों व लक्षणों का वास्तविक इलाज सम्भव हो पाता है। साथ ही व्यक्ति के लक्षणों की प्रकृति अर्थात् कब परेशानी बढ़ती है, कब घटती है, कैसे आराम मिलता है, शरीर के किस भाग में परेशानी रहती है, किस प्रकार का दर्द होता है, आदि बातों पर भी ध्यान दिया जाता है, जिससे व्यक्ति के इलाज में कोई कमी नहीं रहती व वह पूर्णरूपेण स्वस्थ एवं निरोगी हो जाता है। Homoeopathic औषधियों का कोई 'side effects' अर्थात् विपरीत प्रभाव भी नहीं होता, बशर्ते औषधि बताई गई विधि के अनुसार कम मात्रा में व्यक्ति के लक्षणों को मिलाकर ली गई हो।

यह चिकित्सा पद्धति 'समः समम् समयते' अर्थात् Similia Similibus Curentur (Let likes be treated by likes) अर्थात् लक्षणों की समानता के आधार पर कार्य करती है। अतः एक ही रोग होने पर भी दो भिन्न व्यक्तियों के लक्षणों के आधार पर दोनों के लिए भिन्न-भिन्न औषधियां भी दी जाती हैं। इसमें रोग से ज्यादा महत्त्व लक्षणों का है। उदाहरण के तौर पर Allopathic चिकित्सा पद्धति में जुकाम-खांसी होने पर दो भिन्न व्यक्तियों को भी एक ही प्रकार की दवा दी जाती है, किंतु Homoeopathy में दोनों व्यक्तियों को लक्षणों के आधार पर दवाएं दी जाएंगी, जो कि दोनों व्यक्तियों के भिन्न लक्षणों के आधार पर भिन्न भी हो सकती हैं।

शरीर में उत्पन्न बिमारियों के कारण का मानसिकता से कैसा संबंध है यह Homoeopathy अच्छे से पहचानती है। हर प्रकरण में मरीज की मानसिक एवं शारीरिक स्थिति की जाँच करके ही उसके अनुकूल दवाई दी जाती है, जिससे बीमारी समूल नष्ट हो जाती है।

आज के इस चकाचौंध भरे युग में, जबकि महंगाई चरम सीमा पर हो और बीमारियां नए-नए रूप धारण करके अनेकानेक जटिलताएं उत्पन्न कर रही हों, आम आदमी इन बीमारियों से छुटकारा पाने के लिए कुछ सस्ते उपाय खोजता है। ऐसे में, विगत दो सौ वर्षों से भी अधिक समय से जन-समुदाय की सेवा में रत, सस्ती, सरल एवं सम्पूर्ण चिकित्सा पद्धति-'Homoeopathy' जटिल-से-जटिल रोगों से राहत दिलाने में अत्यंत सफल सिद्ध रही है।

कई बार तो जो रोग बार-बार शल्य क्रिया के बाद भी ठीक नहीं होते, वह Homoeopathic Medicine से बड़ी ही चमत्कारिक ढ़ंग से ठीक हो जाते हैं। साथ ही कुछ ऐसी बीमारियाँ हैं, जिनमें Homoeopathic Medicine बेहद कारगर सिद्ध हुई है। Homoeopathic Medicine, chronic disease में सार्थक पाया गया है।

अन्त में, मैं कहना चाहूँगी कि Homoeopathic सहज, सस्ती और सम्पूर्ण चिकित्सा पद्धति है। ये औषधियाँ शरीर के किसी एक अंग या भाग पर कार्य नहीं करती, बल्कि रोगी के संपूर्ण लक्षणों की चिकित्सा करती है। लेकिन Homoeopathic के क्षेत्र में भी नये-नये invention की आवश्यकता है, इस विधा से जुड़े

लोगों को अपने **innovative ideas** को विकसित करना होगा ताकि विभिन्न प्रकार के रोगों पर नियंत्रण पाया जा सके। इससे **Homoeopathic** पर लोगों का और विश्वास बढ़ेगा। विभिन्न बीमारियों का निदान की दिशा में चिकित्सा जगता का निरंतर आगे बढ़ना जनहित में सार्थक प्रयास होगा।

जय हिन्द! जय झारखण्ड!